Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058,
https://www.srjis.com/issues_data/248
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, FEB-MAR 2025, VOL-13/68
https://doi.org/10.5281/zenodo.15245095

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म –जागरूकता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का लिंग के संबंध में अध्ययन

ओरुषि सक्सैना

शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आई.आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी, मेरठ ।

डॉ. सरिता गोस्वामी

प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आई.आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी, मेरठ ।

Paper Received On: 21 February 2025

Peer Reviewed On: 25 March 2025

Published On: 01 April 2025

Abstract

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मे आत्म-जागरूकता एवं समायोजन दोनों का विकास अत्याधिक महत्वपूर्ण है क्योकि यह उनके भविष्य के लक्ष्यो और आकांक्षाओ को प्राप्त करने में सहायक होता है। आत्म-जागरूकता एवं समायोजन केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं अपितु वयस्कों के लिए भी आवश्यक है।आत्म-जागरूकता और समायोजन उन्हें न केवल अपनी चुनौतियों को देखने का अवसर प्रदान करती है अपितु स्पष्ट करती है कि वे किसमें अच्छे हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि उनके सीखने के परिणामों को संदर्भित करती है, स्कूलों को केवल अपने छात्रों की उच्च उपलब्धि को ही महत्व नहीं देना चाहिए, अपितु स्वयं के तथा वातावरण के साथ समायोजन करना सिखाने को महत्व दिया जाना चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन में चंदौसी शहर के 200 माध्यमिक विद्यार्थियों (100 छात्र और 100 छात्रा) का उदेश्य पूर्ण सर्वेक्षण विधि से चयनित किया गया है। इस सर्वेक्षण अध्ययन में, जनसंख्या से नमूना का चयन करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर किया गया है। आत्म-जागरुकता के मापन हेतु डा० अरुण द्वारा मानकीकृत मापनी आत्म-जागरुकता परीक्षण का प्रयोग किया गया है एवं समायोजन के मापन हेतु डॉ रामजी श्रीवास्तव एवं डॉ वीना श्रीवास्तव द्वारा मानकीकृत मापनी समायोजन परीक्षण का प्रयोग किया गया है एवं शैक्षिक उपलब्धि का परीक्षण हाईस्कूल के परीक्षाफल से ज्ञात किया गया है। परिणामो से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओ की आत्म-जागरुकता एवं समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है जबकि शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म जागरूकता ,समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को समझने हेतु किया गया है।

***मूल शब्द** :- माध्यमिक शिक्षा, आत्म-जागरूकता, समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि ।*

प्रस्तावना – वर्तमान में विश्व प्रतिस्पर्धा उन्मुख है। यदि युवाओं को प्रतिस्पर्धा युग में अपने अस्तित्व को सजीव बनाये रखना है तो उन्हें अपनी शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने की नितान्त आवश्यकता है। शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु, छात्रों को विभिन्न कौशलो में पारंगतता प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। उन कौशलों में से आत्म-

Copyright@2025 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जागरूकता अत्याधिक महत्वपूर्ण कौशल है जिसे आत्मसात करके कोई भी छात्र श्रेष्ठ शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त कर सकता है। आत्म-जागरूकता किसी के व्यक्तिगत पहचान स्थापित करने की क्षमता को संदर्भित करती है (डुवल और विक्लंड 1972)। आत्म-जागरूकता के माध्यम से कोई भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी अपनी ताकत-कमजोरी, अवसर और योग्यताओं का विश्लेषणकर उन्हें अपनी उपलब्धियों में प्रतिबिंबित करेंगे। समाज में निर्धारित सभी लक्ष्य किसी के कैरियर के माध्यम से मापे जाते हैं। ऐसा कैरियर शैक्षणिक उपलब्धि के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए हाई स्कूल के छात्रों में आत्म-जागरूकता विकसित करना अत्याधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि हाईस्कूल स्तर युवा वर्ग के विकास का आधार है, इसलिए उन्हें उचित शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वे पूर्ण आत्म विश्वास के साथ प्रतिस्पर्धा से युक्त विश्व का सामना कर सकें। किशोरो के लिये आत्म-जागरूकता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि तीनों ही सामाजिक एवं भावनात्मक योग्यता है,जिससे उनमें महत्वपूर्ण कौशलो का विकास होता है और वे अपने लक्ष्यों तक पहुँचते है ।

स्कूल किसी भी बच्चे के समाजीकरण का एक प्रमुख संस्थान है वह लगभग 12 वर्षों तक स्कूल में प्रतिदिन 5 से 7 घंटे बिताता है। स्कूल बच्चे के व्यक्तित्व को विकसित करने के सबसे महत्वपूर्ण आधार स्तंभों में से एक है। बच्चे सीखने की प्रक्रिया, गृहकार्य, सामाजिक संचार, भावनाओं का संरक्षण, घर और स्कूल में दिन-प्रतिदिन की बातचीत के प्रबंधन जैसी विभिन्न क्षमताओं में दक्षता प्राप्त करते हैं (राजू और रहमतुल्ला, 2007)। वास्तव में, बच्चे का विकास अपने आस-पास के वातावरण पर निर्भर करता है, अर्थात बच्चे का विकास घर तथा स्कूल की सुविधाओं पर निर्भर करता हैं इसलिए चिंता का विषय यह है कि बच्चों की विकास संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्कूल की सुविधाओं को कैसे बढ़ाया और बेहतर बनाया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति परिवार से बाहर निकल कर और स्कूल में प्रवेश करने के पश्चात् अपने अनूठे व्यक्तित्व और पर्यावरण के मध्य समायोजन की एक लंबी श्रृंखला बनाता है। प्रत्येक लड़के और लड़की की एक अलग व्यक्तिव के रूप में पहचान बनने की उत्कट इच्छा, एक स्वस्थ शरीर, बढ़ती बौद्धिक क्षमता, भावनात्मक संतुलन की अधिक मात्रा और सामाजिक समूहों में अधिक भागीदारी, ऐसी विशेषताएं उनके व्यक्तित्व को निखारती हैं (सिंह, त्रिपाठी और महतो, 2014)। यहां तक कि माता-पिता, शिक्षक और समाज के अन्य महत्वपूर्ण सदस्य भी उनकी इस इच्छा को प्रोत्साहित करेंगे। सी.वी. गुड (1959) के अनुसार, समायोजन पर्यावरण या पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों के अनुकूल व्यवहार के तरीकों को खोजने और अपनाने की प्रक्रिया है (मंगल, 2002, पृष्ठ 490) यह वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक जीवित जीव अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के मध्य संतुलन बनाए रखता है।

प्रमुख शब्दों की परिभाषा-

माध्यमिक शिक्षा :- माध्यमिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा का वह चरण है जो प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् और उच्च शिक्षा से पूर्व आती है । यह आम तौर पर 12 से 18 साल की उम्र के विद्यार्थियों के लिए होती है । माध्यमिक शिक्षा में कक्षा 9वीं से 12वीं तक के बच्चे पढ़ते हैं । (NCERT. (2018).

आत्म – जागरूकता :- आत्म -जागरुकता, शिक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह छात्रों के जीवन की आवश्यकता को पूर्ण करने तथा ध्यान केंद्रित करने की कुशलता को विकसित करने में सहायक होती है। यह स्पष्ट है कि उम्र में वृद्धि के साथ-साथ व्यक्ति की चिन्तन करने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। आत्म -जागरुकता का तात्पर्य व्यक्ति का किसी के आकर्षण का केन्द्र बनने की क्षमता विकसित करना है व इस अवस्था में व्यक्ति स्वयं के बारे सक्रिय होकर पहचान करता है एवं जानकारी संग्रहित करता है।

समायोजन :- समायोजन एक व्यक्ति की ऐसी स्थिति है जो उसे अपने शारीरिक, व्यावसायिक और सामाजिक वातावरण में परिवर्तनों के अनुकूल करने में सक्षम करती है । दूसरे शब्दों में, समायोजन से तात्पर्य परस्पर विरोधी जरूरतों या पर्यावरण में बाधाओं से उत्पन्न आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करने की व्यवहारिक प्रक्रिया है जो जीवनपर्यंत प्राप्त किए अनुभवों के पश्चात् विभिन्न परिवर्तनों के कारण, किशोरों को यह नियमित रूप से सीखना पड़ता है कि अपने पर्यावरण के साथ कैसे सामंजस्य स्थापित किया जाए एवं भावी चुनौतियों का सामना करके उन्हें अपनी परिस्थितियों के अनुरूप कैसे परिवर्तित कर सके ।

शैक्षिक उपलब्धि :- व्यक्ति के जीवन में व्यक्तिगत भिन्नता का ज्ञान तथा उसने किसी कार्य को कितना सीखा इसका संज्ञान उपलब्धि के द्वारा होता है। मनोविज्ञान के परीक्षणों की श्रृंखला के प्रयोग में आने वाली उपलब्धि का शैक्षणिक जीवन में अत्यंत महत्व है । शैक्षिक उपलब्धि विद्यालयों के विषय संबंधी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ ज्ञान प्राप्त करना एवं कौशल का विकास करना है। प्रत्येक शिक्षण कार्य में शैक्षिक उपलब्धि का अत्याधिक महत्व है इससे विद्यार्थी के बौद्धिक स्तर का पता चलता है।

साहित्य समीक्षा :-

Duval, T. S. & Silvia, P. J. (2002) ने आत्म-जागरुकता सुधार की सम्भावना तथा स्वयं सेवा पूर्वाग्रह का अध्ययन किया। इस अध्ययन में 40 मनोविज्ञान के छात्रों का चयन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि आत्म जागरुकता का प्रभाव सुधार की सम्भावना पर सकारात्मक पड़ता है।

Myer, S. (2003) ने अध्ययन किया कि व्यक्तित्व विकास में आत्म जागरुकता की क्या भूमिका है ,इस अध्ययन हेतु इन्होंने एक गुणात्मक शोध किया। इसमें इन्होंने परामर्श शिक्षा के स्नातक स्तर के 16 विद्यार्थियों को लिया। आँकड़ों के संग्रह हेतु विभिन्न प्रकार से विद्यार्थियों से सम्पर्क किया गया। अध्ययन में पाया गया कि व्यक्तित्व विकास को आत्म जागरुकता प्रभावित करती है।

एनाचे आर.जी. और माटेई आर.एस. (2018) ने "हाई स्कूल के छात्रों की आत्म-जागरूकता और व्यावसायिक परामर्श" पर एक अध्ययन किया। शोध के विषयों के समूह का प्रतिनिधित्व 155 हाई स्कूल के छात्रों द्वारा किया गया था, जिनकी आयु 16 से 18 वर्ष थी, रोमानिया के दक्षिण-पूर्व से 5,000 छात्रों में से चयनित छात्रों ने इस परियोजना में भाग लिया। शोध के उद्देश्यों में किशोरों के व्यक्तित्व के प्रकारों की जांच की गई यह शैक्षणिक और पेशेवर मार्गदर्शन के लिए आवश्यक हैं, उनके माध्यम से यह जांचना कि व्यक्तिगत निर्णय कैसे किए जाते हैं और सामाजिक समस्याएँ उपयुक्त पेशे के चयन में पूर्वापेक्षाएँ हैं , इस जागरूकता अध्ययन से सीखने की प्रक्रिया मे

कुछ लाभ होंगे और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक उपयुक्त रणनीति स्थापित करने की आवश्यकता के रूप में माना जा सकता है (लोम्बार्डोजी, 2016)। किसी कार्य को करने का स्पष्ट लक्ष्य, एक छात्र में उच्च स्तर की आत्म-जागरूकता का सूचक होता है (रिडले, शुट्ज़, ग्लैंज़ और वेनस्टीन, 1992)। आत्म-जागरूकता मेटाकॉग्निटिव भी है जो छात्रों को आत्म-चिंतनशील होने में मदद करती है, इस बारे में कि उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने की कितनी संभावना है और वे उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में कितनी दूर तक सफल हुए हैं (बेकार्ट, 1999; डनलप और ग्रैबिंगर, 2003; ट्रैवर्स, मॉरिसन और लोके, 2015)।

सारिका तिवारी (2009) ने समायोजन क्षमता पर अध्ययन करते हुए अपने अध्ययन के उद्देश्य में बताया था कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –शहरी विद्यालयों एवं ग्रामीण विद्यालयों के उ.मा. स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक स्तर नहीं है अर्थात विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता इस बात से प्रभावित नहीं होती है कि वे शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् है कि ग्रामीण विद्यालयों में अर्थात् समायोजन क्षेत्र में विशेष के प्रभाव से अप्रभावित रहता है।

संध्या खेड़ा, शिवानी खोसला, (2012) "युवा स्कूल जीवन कौशल" कार्यक्रम के माध्यम से विकसित स्वयं की अवधारणा के संबंध में "किशोरों के मूल जीवन कौशल का अध्ययन" के प्रमुख निष्कर्ष यह हैं कि किशोरों के कोर अफेक्टिव लाइफ स्किल और सेल्फ कॉन्सेप्ट के बीच एक सकारात्मक सह-संबंध है, जिसका अर्थ है कि जिनके पास ये आवश्यक कौशल हैं, वे सभी पहलुओं में आत्मविश्वास रखते हैं।

Polk, D. M. (2013) ने कक्षागत सीखना तथा अनुभाविक सीखने के बीच टीम शिक्षण में आत्म जागरुकता का अध्ययन किया। पाठ्यवस्तु विश्लेषण का प्रयोग कर आँकड़ों को एकत्रित कर विश्लेषण किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि टीम शिक्षण की प्रभावशीलता को आत्म जागरुकता प्रभावित करती है।

सिंह, जितेंद्र (2014) ने शारीरिक विकलांगता एवं सामान्य विद्यार्थियों के मध्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में बरेली जिले के 500 विद्यार्थियों का चयन किया। जिसमें 250 विद्यार्थी शारीरिक विकलांगता वाले तथा 250 सामान्य थे। निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा शारीरिक विकलांग विद्यार्थी कम समायोजन कर पाते हैं।

राव सुनील (2015) ने माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण किशोरों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर एवं देहात के 600 छात्रों का चयन किया गया, जिसमें 300 शहरी क्षेत्र के तथा 300 ग्रामीण क्षेत्र के थे। निष्कर्ष में यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का समायोजन शहरी छात्रों की तुलना से कम है।

भगत (2016) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन में एक महत्वपूर्ण लिंग अंतर पाया। लड़कियां लड़कों की तुलना में अधिक समायोजित पाई जाती हैं। भगत (2016) ने निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों

के सामाजिक समायोजन पर लिंग का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। लड़के अपने समकक्षों की तुलना में सामाजिक रूप से अधिक समायोजित पाए जाते हैं।

पटेल एवं अन्य (2019) ने 'प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षतः पाया गया कि बालकों एवं बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव पड़ता है। विभिन्न शैक्षणिक स्तर के अभिभावकों के बालकों एवं बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया।

अध्ययन का उद्देश्य :-

1. माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की आत्म-जागरुकता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :-

1. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की आत्म-जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है

अध्ययन का महत्व –

आत्म-जागरूकता कौशल, किशोरावस्था की चुनौतियों का सामना करने और वयस्कता के लिए तैयार करने हेतु विकसित किया जाना चाहिए। आत्म-जागरूकता शिक्षा से, शिक्षक, छात्रों को निर्णय लेने, अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने और स्वस्थ संबंध बनाने के लिए सशक्त बना सकते है।

समायोजन को प्रक्रिया और उस प्रक्रिया के परिणाम दोनों के रूप में समझा जा सकता है, जो किसी उपलब्धि या उपलब्धि के रूप में होता है। जब कोई गरीब बच्चा अपने घर में बिजली न होने के कारण स्ट्रीट लाइट के नीचे पढ़ता है, तो उसे समायोजन की प्रक्रिया के रूप मे जाना जाता है। वह अपनी परीक्षा में सफलता अथवा अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति अथवा अपनी उपलब्धि पर गर्व के रूप में जो कुछ भी प्राप्त करता है, वह उसके स्वयं और पर्यावरण का परिणाम है। डार्विन के विकास के सिद्धांत के अनुसार, वे प्रजातियाँ जो जीवन की माँगों के अनुकूल सफलतापूर्वक ढल गईं, जीवित रहीं और बढ़ती गईं जबकि अन्य समाप्त हो गईं। इसलिए, जो छात्र परिवर्तित परिस्थितियों की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को समायोजित करते हैं, वे उच्च उपलब्धि प्राप्त करते हैं, जबकि अन्य दयनीय जीवन जीते हैं या समाज के लिए हानिकारक होते हैं। इसलिए, छात्रों को अपने पर्यावरण में स्वयं को समायोजित करने के लिए किसी न किसी तरह से स्वयं में परिवर्तन करना चाहिए,परन्तु वर्तमान पीढ़ी के छात्रों में समायोजन की प्रवृत्ति का अभाव है और वे स्वयं और पर्यावरण के साथ समायोजन के मूल्य अथवा महत्व को नहीं जानते हैं। इन परिस्थितियों में छात्रों के समायोजन स्तर के अध्ययन की आवश्यकता है।

न्यायदर्श :- शोध के न्यायदर्श के लिए संभल जिले के केवल चंदौसी क्षेत्र को लिया गया है। शोध का प्रतिदर्श केवल 100 छात्र व 100 छात्राओ पर आधारित है । प्रस्तुत शोध केवल 15 – 17 वर्षीय किशोर छात्र व छात्राओं पर ही आधारित है जो माध्यमिक कक्षा (10) के विद्यार्थी है ।

प्रयुक्त उपकरण :-

1. आत्म-जागरूकता परीक्षण – डॉ.अरुण कुमार (लखनऊ), सुधीर कुमार (हरदोई) ।
2. समायोजन परीक्षण - डॉ रामजी श्रीवास्तव एवं डॉ वीना श्रीवास्तव (आज़मगढ़) ।
3. शैक्षिक उपलब्धि - हाईस्कूल का परीक्षाफल ।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी-परीक्षण ।

शोध विधि :- प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

परिकल्पना 1 :- माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की आत्म-जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओ की आत्म-जागरुकता से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण :-

चर	छात्र समूह	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण का मान	Table Value	परिणाम (सार्थकता का स्तर – 0.05)
आत्म-जागरूकता	छात्र	100	345.26	6.89	0.41	1.96	सार्थक नही
	छात्रा	100	344.65	12.89			

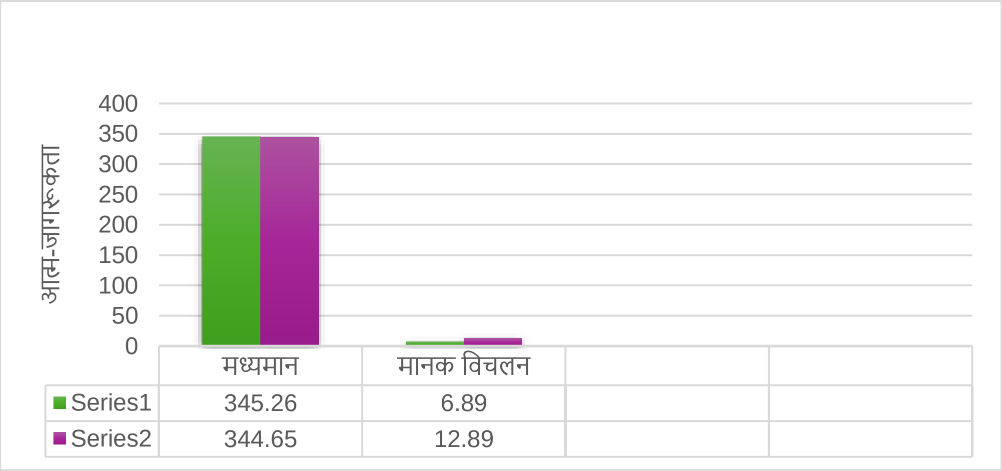

विश्लेषण एवं व्याख्या : उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की आत्म-जागरूकता का मध्यमान 345.26 है तथा मानक विचलन 6.89 है तथा छात्राओं की आत्म-जागरूकता का मध्यमान 344.65 है तथा मानक विचलन 12.89 है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओं की आत्म जागरूकता के मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अंतर की सार्थकता की जांच करने पर टी' परीक्षण का मान 0.41 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 विश्वास स्तर पर 'टी' के अपेक्षित मान 1.962 से कम है। माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की आत्म-जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया हैअर्थात माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की आत्म-जागरूकता पर लिंगीय स्तर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, माध्यमिक स्तर पर छात्र तथा छात्राओ की आत्म-जागरूकता का स्तर समान हैं। प्रस्तुत परिणामो से यह प्रदर्शित होता है कि विद्यालय का वातावरण, जागरूकता से संबंधित कार्यक्रम और समान अवसर प्रदान करने वाले कारक ही दोनों लिंगों के मध्य संतुलित आत्म-जागरूकता विकसित करने में सहायक हुए हैं।

परिकल्पना 2 :-

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओ के समायोजन से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण :

चर	छात्र समूह	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण का मान	Table Value	परिणाम (सार्थकता का स्तर – 0.05)
समायोजन	छात्र	100	117.22	3.15	0.57	1.96	सार्थक नही
	छात्रा	100	117.44	2.19			

विश्लेषण एवं व्याख्या:- उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के समायोजन का मध्यमान 117.22 है तथा मानक विचलन 3.15 है तथा छात्राओं के समायोजन का

मध्यमान 117.44 है तथा मानक विचलन 2.19 है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओं के समायोजन के मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अंतर की सार्थकता की जांच करने पर टी' परीक्षण का मान 0.57 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 विश्वास स्तर पर 'टी' के अपेक्षित मान 1.962 से कम है।

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया है अर्थात माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के समायोजन पर लिंगीय स्तर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, इसका अभिप्राय यह है कि दोनों लिंगों के छात्र अपने परिवेश के साथ अनुकूल होने में समान रूप से सक्षम हैं।लड़कों और लड़कियों के सामाजिक, भावनात्मक, शैक्षणिक और परिवारिक अनुकूलन के अनुभव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं प्राप्त हुआ है।इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यालयों और परिवारों द्वारा प्रदान की गई सहायता ने लिंगों के मध्य अनुकूलन स्तरों में संतुलन बनाए रखने में सहायता की है।

परिकल्पना 3 :-

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओ के शैक्षिक उपलब्धि से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण :

चर	छात्र समूह	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण का मान	Table Value	परिणाम (सार्थकता का स्तर – 0.05)
शैक्षिक उपलब्धि	छात्र	100	347.44	58.71	4.4019	1.96	सार्थक
	छात्रा	100	306.46	72.26			

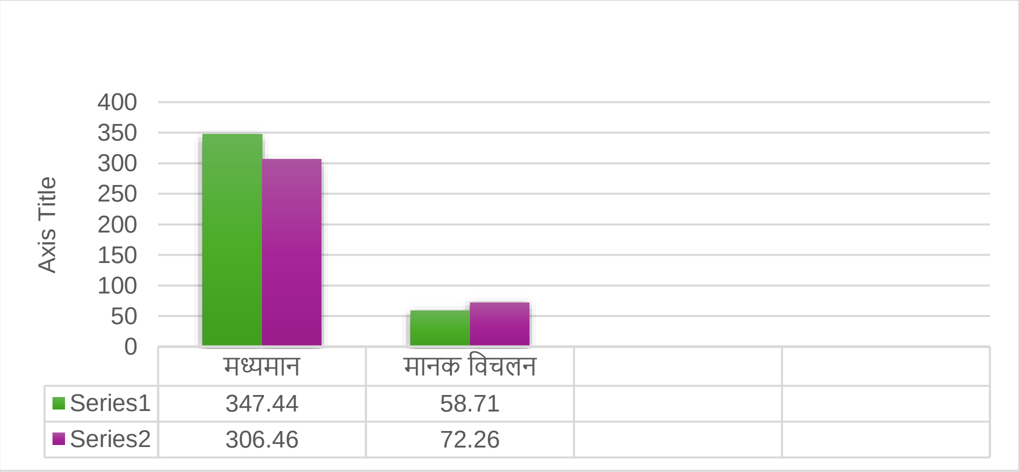

विश्लेषण एवं व्याख्या:- उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों का शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 347.44 है तथा मानक विचलन 58.71 है तथा छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 306.46 है तथा मानक विचलन 72.26 है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अंतर की सार्थकता की जांच करने पर टी'

परीक्षण का मान 4.4019 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 विश्वास स्तर पर 'टी' के अपेक्षित मान 1.962 से कम है। माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है । उनके माध्यों में जो अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक है, अर्थात माध्यमिक स्तर पर लड़कों की शैक्षिक उपलब्धि लड़कियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी है यह अंतर शिक्षण विधियां, लिंग आधारित कक्षागत गतिविधियाँ, प्रेरणा, आत्मविश्वास, सामाजिक अपेक्षाओं में अंतर तथा घर पर सीखने का वातावरण आदि के द्वारा प्रभावित हो सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ :-

- विद्यार्थियों में आत्म-जागरूकता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा देना उनके भविष्य की सफलता में एक निवेश है। आत्म-जागरूकता और समायोजन विद्यार्थियों को उनकी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने, चुनौतियों का सामना करने और सशक्त संबंध बनाने में मदद करता है। विद्यालयो मे आत्म-जागरूकता और समायोजन को प्राथमिकता देकर, छात्रों के शैक्षणिक और भावनात्मक विकास किया जा सकता हैं।
- परिवार का वातावरण ऐसा बनाना होगा जहां लड़के और लड़कियां दोनों समान रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकें।
- स्कूल को एनसीसी/एनएसएस गतिविधियाँ आयोजित करनी होंगी, जिससे उनमें वांछनीय सामाजिक गुणों, विचारशीलता और सहयोग का विकास हो सके जिससे उनमें समायोजित करने की प्रवृत्ति विकसित हो सके।
- छात्रों को अपने विचार व्यक्त करने और स्कूल अधिकारियों के साथ अपनी समस्याओं पर चर्चा करने का अवसर दिया जाना चाहिए। इससे छात्रों में आत्मविश्वास और मानसिक संतुष्टि विकसित होती है।
- अभिभावकों का समर्थन ही बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन को बढ़ावा देता है । यदि अभिभावक सक्रिय रूप से बच्चों के पढ़ाई में रुचि लेते है तो यह उनके शैक्षिक परिणाम को श्रेष्ठ बनाता है ।

भावी सुझाव :-

- वर्तमान शोध अध्ययन में कक्षा 10 तक के विद्यार्थियों को लिया गया आगामी शोध में अन्य आयु वर्ग के विद्यार्थियों को लिया जा सकता है।
- वर्तमान शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म – जागरूकता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है आगामी शोध मे उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी लिया जा सकता है।
- वर्तमान शोध में 200 विद्यार्थियो को लिया गया है आगामी शोध मे 200 से अधिक विद्यार्थियों को भी लिया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध का अध्ययन चंदौसी क्षेत्र मे किया गया है आगामी शोध अन्य क्षेत्रों मे भी किया जा सकता है।

निष्कर्ष –

मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों जैसे आत्म- जागरूकता और समायोजन में, छात्र एवं छात्राओं का प्रदर्शन समान स्तर पर होता है, जो संतुलित भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास को दर्शाता है। यद्यपि शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नताएँ इस बात की आवश्यकता को प्रकट करती हैं कि हमें उन कारकों को खोजना होगा जो लिंग के आधार पर शैक्षणिक प्रदर्शन में असमानताओं का कारण बने है। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को अपने जीवन के इस चरण में अपनी समायोजन क्षमताओं की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। जो आत्म-जागरूक होते हैं, वे अपनी ताकत और चुनौतियों को पहचानते हैं। जब छात्र स्वयं को भली-भाँति समझते हैं, तभी उनमें सकारात्मक आत्म-सम्मान का निर्माण करना सुगम होता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध भावी अध्येताओं के लिए आधारभूत, उपयोगी एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगा, ऐसा शोधकर्ता का विश्वास है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

गुड, कार्टर वी. (1959). डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन (दूसरा संस्करण), न्यूयॉर्क, यूएसए: मैकग्रॉ हिल बुक कंपनी.

कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (1979). शैक्षिक मनोविज्ञान. मेरठ, भारत: लॉयल बुक डिपो.

मंगल एस.के., (2002). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड

डुवल, टी.एस., और सिल्विया, पी.जे. (2002)। आत्म-जागरूकता, सुधार की संभावना, और स्वार्थी पूर्वाग्रह । जर्नल ऑफ पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 82(1), 49-61।

मायर्स, एस. (2003). आत्म-जागरूकता किस प्रकार व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देती है, इस पर चिंतन। पर्सन-सेंट्रलर्ड जर्नल, 3, 3-22.

माथुर एस.एस (2005). शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology) (17वीं संस्करण). आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

सारिका तिवारी (2009)- विद्यार्थयों में समायोजन का अध्ययन" एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष 28, अंक 1 जनवरी-जून 2009, पृ. 111

कुमार ए., और ढिल्लों जे.एस., (2010). "माताओं की कामकाजी स्थिति के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, मूल्यों और समायोजन का अध्ययन" । (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर) ।

पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन ।

ऐस. के. मंगल[2012] ,शिक्षा मनोविज्ञान ।

मंजीत सेन गुप्त. (2013). प्रारंभिक बाल्यावस्था: देखभाल और शिक्षा. पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

पोल्क, डी.एम. (2013). टीम-शिक्षण के साथ आत्म-जागरूकता विकसित करना: कक्षा शिक्षण और अनुभवात्मक शिक्षण के बीच संबंध। जर्नल ऑफ लीडरशिप एजुकेशन, 12(2), 122-135.

सिंह, जितेंद्र (2014),Dr. Tirmal Singh [Subject: Education] International Journal of Research in Humanities & Soc. Sciences.

मानसिंहभाई टी.एस., और यशवंतभाई एच.पी. (2014). "उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि"। जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन, नॉलेज एंड रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज, वॉल्यूम। 3, सं. 1, पृ. 128-130.

राव सुनील (2015), Dr. Tirmal Singh [Subject: Education] International Journal of Research In Humanities & Soc. Sciences.

निधि और करमने, एम. मकबूल, (2015). "लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में कॉलेज के छात्रों की समायोजन समस्याएँ"। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ करंट रिसर्च, खंड 7, सं. 4, पृ. 14574-14578

स्वप्ना. बी, भारती. राम धन (2018)'माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक समायोजन का एक अध्ययन' खंड-4 अंक-1 IJARIIE-ISSN(O)-2395-4396

NCERT. (2018). शिक्षा का समाजशास्त्र (Sociology of Education). नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT).

पटेल एवं अन्य (2019), "प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन"पी-एच०डी०, शिक्षा शास्त्र यूनिवर्सिटी ऑफ कल्यानी।

डॉ मधु , दीपा सिंह (2021) शिक्षाशास्त्र , ऐस पी बी डी पब्लिकेशन आगरा ।

सौरभ अग्रवाल [2022] शिक्षाशास्त्र: शिक्षा की अवधारणात्मक रूपरेखा ।

अन्नपूर्णा. A1, डॉ. एन. लक्ष्मी2(2024) 'हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में आत्म-जागरूकता का महत्व' आईएसएसएन: 2455-6211, खंड 12, अंक 2, आईजेईआरएसएम

अनुसंधान प्रकाशन और सेमिनार के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल अप्रैल वॉल्यूम. 15 नंबर 2 (2024): अप्रैल जून 2024आत्म के सिद्धांत का संबंध उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के जीवन कौशल का अध्ययन

SHODH SAGAR International Journal for Research Publication and Seminar ISSN: 2278-6848 | Vol. 15 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

Cite Your Article as:

Orushi Saxena & Dr. Sarita Goswani. (2025). MADHYAMIK STAR KE VIDHYARTHIYON KI AATM - JAGRUKTA, SAMAYOJAN EANV SHAIKSHIK UPLABDHI KA LING KE SAMBANDH ME ADHYAYAN. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, 13(68), 154–164. https://doi.org/10.5281/zenodo.15245095